

धर्मरत्न
संज्ञाचार्य
सुरत श्री महाबिहार

DH 207

समस्तु ॥ स्वस्तिवः कृत्वा व
 द्रस्वस्ति दवा स भक्त का स्व
 स्ति सर्वानि ह्ना नि सर्व का
 लं दि भक्तुवः वृद्ध पृथ्वान्
 लावन दवतानां मत्त नूच ॥
 या यार्थसि मरि प्रत्त सर्वाः ॥
 यममृद्वनाम् ॥ स्वस्ति वादी
 पदस्तु स्वस्ति वादी चतुष्प
 द स्वस्ति वाकुजा मार्ग स्व

स्ति प्रत्तागत्त पृच ॥ स्वस्ति वा
 दी स्वस्ति दवा स्वम ॥ अदिन
 स्ति नः सर्वप्र स्वस्ति वा शक्तु
 मा कश्चिन्पाप मागमत् ॥
 सर्वसत्त्वा सर्व प्राप्ता सर्वर
 ता स्वक वला ॥ सर्वस्व खिन स वेद
 लु सर्वस्तु निनात्त या ॥ स
 र्वरुद्रा निप पृथक्तु मा कश्चिन्
 पाप मागमत् ॥ यानी ह्ना
 नि स मागता नि स्ति नानि ह्ना

वा प्रथमा नृपिका ॥ कुरु वरुण
 प्रिसक्तं प्रजासु दिवा च नाराज
 च नरु धर्मम् ॥ ॥ आदौ क
 ल्यानं मध्य कल्याणं पर्यव
 सान कल्याणं स्वर्गं स्वयंजनं
 कवलं पत्रिर्गृहं पत्रिर्गृह
 पर्यवदात बुद्ध चर्यसंप्रका
 मयति स्म ॥ आयुर्वृद्धि यत्न
 वृद्धि वृद्धि विद्या सखा च वर

जनधसंनानं एतद्दसफवृद्धि
 ॥ खर्वस्त्रुलतनूगजिन्नुवद
 नं लम्बादनं सुन्दनं ॥ प्रस्वद
 मदलब्ध सुन्दन मूला व्याल
 लगन्धरुत्रं ॥ वन्द्यो लसुणा
 सुतगद्यपतिं सिद्धि हल कर्म
 ॥ ॥ संध्या सिद्धि नवर्णा खन
 कननिक नायासु सफार्क कानि
 कर्त्तुं सर्वार्त्तं हनि रूद मृत्यु

विविक्तिस्य दात्रा विज्ञा
 वामदात्रा कमलमतिमिहं
 कपूरध्वजाया ॥ कल्यादक
 त्रिकाल्यापनिगतिभिन्नसाम्
 कर्मद्विहस्ता मन्त्रालिमन्त्रि
 तां प्रिमूरवगलदस्तुजसादगु
 म्कनायं सत्यचार्द्रकिनास्या
 वनरुहगुमनां क्राधमूलानन
 का सान्नासानूगाना विविक्तस्य
 तमद्वयकन्या मद्रावमद्रितांगि
 व्यपगतवसना धाजवादावनांगि ॥

डानमामरुनाथाय ॥ ॥
 मरुशीलाकनाथ जिन
 वनमकुटा ऊर्ध्वपंवाधि
 सत्वः ॥ मेष्ठियावकुपाक्षि
 सखवजहिन ना नाह्ला
 रुद्रपाला वृद्धवेलाचनादि
 त्रिभुवननमिहं कीदानी
 रम्यदृशः ॥ १० ॥ उल्लास
 वार्थसिद्धि विमलधुमलस

मंगलं वाधिसत्त्वं ॥ २ ॥
 हताहं कालवज्रं यशुपति
 दमका वडुघश्च जह्ला-
 पीताहात्राह्ना जा निपूगध
 मथना नर्किना जा महात्मा
 ॥ अजात्यनलकरु प्रतितिदि
 नमचल गन्धरुक्षियमात्री
 ॥ तुल्लास ॥ ३ ॥ संघं तुल्लास
 वन्धुगुहागहनिलया वाधि
 चिन्तासूचिना वडासात्र्य

नाजा विजितजितगुल्म हन्
 काटिलगन्ध वडासात्र्यना
 जा विजितजितगुल्म सर्वस
 त्वानुकंपा ॥ ४ ॥ पुहाचडाव
 नात्रा नजनूजहकृदि शानसं
 लनरात्रा मालिचिमानमात्रा
 सकलरुयहना पीतवधूमि
 वक्रा मायूनीमामकीच ऊपि
 ननिपूगध पाशुला लाचना
 या ॥ तुल्लास ॥ ५ ॥ गान्धाली

जागुलीच कुजनहिनकनाख
 कृपा भंक् भगु वानाहीव
 इहसा अशिवनसुधया धर्म
 धातुधनीच ॥ कपूरीशनस
 ना कुजनहिनकनाख कृपा
 भलीच ॥ तुल्यास ॥ ५ ॥ वी
 भमाल्यासगीता पुतीतजिन
 वल सार्वविन्दुप्रवजा ॥ वना
 लीघ १६ वडा पुहसिनवदना
 सगुन आर्यताना नसिवृद्ध

स्याधिसकलरुयहना
 सात्रिदिफिवजा ॥ तुल्या
 स ॥ ५ ॥ वेभाल्या धर्मचक्रं
 प्रतिदिनमचल पर्वत
 गृहकूट ॥ अवस्थां नूविनि
 च कपिनहिनकना काक
 नवाधिवृद्ध श्रीमध्पव
 ताना सननननमिकं श्री
 हलं भंखचक्रं ॥ तुल्यास

॥ कृष्णध्वजवाद्यसं ध्वज
 वजनमिहं लाचनामकृष्ण
 र्थः ॥ वाग्राही पूर्णकृष्ण मनि
 वयवचनं वडघधनि
 धाना वृक्षानां प्रातिहार्य
 सनिवजनमिहं हास्यला
 स्यविलासः ॥ ३ ॥ ॥ ॥
 श्रीवत्स पूरुषिकं ध्वजव
 नकलक्षं चामलमकृष्ण

कं ॥ लं कृष्णहमदधुं दधिह
 लकृष्णमं पोषकटिप्रमाला
 ॥ ३ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 गलणमथा कृष्णसमाकमः ॥ ॥
 वालाकालाकताप्रवजनमृज
 मिना चानृचजामधी सपत्संप
 कं नागानकिचिन वचिना लक
 क वककृकि ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 र्थकत्रपूटमकृष्ण टापकृष्ण
 मांग लानिपकृष्ण ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 कृष्णमधुगिरि एवंचयामि ॥ ॥



